1 थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह में स्थित कलीसिया को पौलुस, सिलवानुस
और तीमुथियुस की ओर से:
परमेश्वर का अनुग्रह और शांति तुम्हारे साथ रहे।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

2 हम तुम सब के लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद देते
रहते हैं। और अपनी प्रार्थनाओं में हमें तुम्हारी याद बनी
रहती है। 3 प्रार्थना करते हुए हम सदा तुम्हारे उस काम की
याद करते हैं जो फल है, विश्वास का, प्रेम से पैदा हुए
तुम्हारे कठिन परिश्रम का, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में
आशा से उत्पन्न तुम्हारी धैर्य पूर्ण सहनशीलता का हमें सदा
ध्यान बना रहता है। 4 परमेश्वर के प्रिय हमारे भाइयो, हम
जानते हैं कि तुम उसके चुने हुए हो। 5 क्योंकि हमारे
सुसमाचार का विवरण तुम्हारे पास मात्र शब्दों में ही नहीं
पहुँचा है बल्कि पवित्र आत्मा सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के
साथ पहुँचा है। तुम जानते हो कि हम जब तुम्हारे साथ थे,
तुम्हारे लाभ के लिये कैसा जीवन जीते थे। 6 कठोर यातनाओं
के बीच तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के
साथ सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का
अनुकरण करने लगे। 7 और इसीलिये मैसीडोनिया और
अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श बन
गये 8 क्योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी, वह न
केवल मैसिडोनिया और अखाया में सुनी गयी बल्कि
परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कहीं जाना माना
गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है।
9-10 क्योंकि वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुमने
हमारा कैसा स्वागत किया था और सजीव तथा सच्चे
परमेश्वर की सेवा करने के लिए और स्वर्ग से उसके पुत्र
के आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए तुम मूर्तियों की ओर
से सजीव परमेश्वर की ओर कैसे मुड़े थे। पुत्र अर्थात् यीशु
को उसने मरे हुओं में से फिर से जिला उठाया था। और
वही परमेश्वर के आने वाले कोप से हमारी रक्षा करता
है।

थिस्सलुनीका में पौलुस का कार्य

2 हे भाइयों, तुम्हारे पास हमारे आने के सम्बन्ध में
तुम स्वयं ही जानते हो कि वह निरर्थक नहीं था।
2 तुम जानते हो कि फिलिप्पी में यातनाएँ झेलने और
दुर्व्यवहार सहने के बाद भी परमेश्वर की सहायता से हमें
कड़े विरोध के रहते हुए भी परमेश्वर के सुसमाचार को
सुनाने का साहस प्राप्त हुआ। 3 निश्चय ही हम जब लोगों
का ध्यान अपने उपदेशों की ओर खींचना चाहते हैं तो वह
इसलिए नहीं कि हम कोई भटके हुए हैं। और न ही इसलिए
कि हमारे उद्देश्य दूषित हैं और इसलिए भी नहीं कि हम
लोगों को छलने का जतन करते हैं। 4 हम लोगों को खुश
करने की कोशिश नहीं करते बल्कि हम तो उस परमेश्वर
को प्रसन्न करते हैं जो हमारे मन का भेद जानता है। 5 निश्चय
ही हम कभी भी ठकुर सुहाती वाणी के साथ तुम्हारे सामने
नहीं आये। जैसा कि तुम जानते ही हो, हमारा उपदेश किसी
लोभ का बहाना नहीं है। परमेश्वर साक्षी है 6 हमने लोगों से
कोई मान सम्मान भी नहीं चाहा। न तुमसे और न ही किसी
और से।
7 यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपना अधिकार
जता सकते थे किन्तु हम तुम्हारे बीच वैसे ही नम्रता के
साथ रहे* जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला कर
उसका पालन-पोषण करती है। 8 हमने तुम्हारे प्रति वैसी
ही नम्रता का अनुभव किया है, इसलिये परमेश्वर से मिले
सुसमाचार को ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने आपको भी
हम तुम्हारे साथ बाँट लेना चाहते हैं क्योंकि तुम हमारे प्रिय

किन्तु ... रहे कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग भी मिलता है:
किन्तु तुम्हारे बीच हम बच्चे ही बने रहे।

हो गये हो। 9हे भाइयो, तुम हमारे कठोर परिश्रम और कठिनाई को याद रखो जो हमने दिन–रात इसलिये किया है ताकि हम परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाते हुए तुम पर बोझ न बनें।

10तुम साक्षी हो और परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम विश्वासियों के प्रति हमने कितनी आस्था, धार्मिकता और दोष रहितता के साथ व्यवहार किया है। 11तुम जानते ही हो कि जैसे एक पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता है12वैसे ही हमने तुममें से हर एक को आग्रह के साथ सुख चैन दिया है। और उस रीति से जाने को कहा है जिससे परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुला भेजा है, प्रसन्न होता है।

13और इसीलिये हम परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते रहते हैं क्योंकि हमसे तुमने जब परमेश्वर का वचन ग्रहण किया तो उसे मानवीय सन्देश के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के सन्देश के रूप में ग्रहण किया, जैसा कि वह वास्तव में है। और तुम विश्वासियों पर जिसका प्रभाव भी है। 14हे भाइयो, तुम यहूदियों में स्थित मसीह यीशु में परमेश्वर की कलीसियाओं का अनुसरण करते रहे हो। तुमने अपने साथी देश–भाइयों से वैसी ही यातनाएँ झेली हैं जैसी उन्होंने उन यहूदियों के हाथों झेली थीं 15जिन्होंने प्रभु यीशु को मार डाला और नबियों को बाहर खदेड़ दिया। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते वे तो समूची मानवता के विरोधी हैं। 16वे विधर्मियों को सुसमाचार का उपदेश देने में बाधा खड़ी करते हैं कि कहीं उन लोगों का उद्धार न हो जाये। इन बातों से वे सदा अपने पापों का घड़ा भरते रहते हैं और अन्तत: अब तो परमेश्वर का प्रकोप उन पर पूरी तरह से आ पड़ा है

फिर मिलने की इच्छा

17हे भाइयो, जहाँ तक हमारी बात है, हम थोड़े समय के लिये तुमसे बिछुड़ गये थे। विचारों से नहीं, केवल शरीर से। सो हम तुमसे मिलने को बहुत उतावले हो उठे। हमारी इच्छा तीव्र हो उठी थी। 18हाँ! हम तुमसे मिलने के लिए बहुत जतन कर रहे थे। मुझ पौलुस ने अनेक बार प्रयत्न किया किन्तु शैतान ने उसमें बाधा डाली। 19भला बताओ तो हमारी आशा, हमारा उल्लास या हमारा वह मुकुट जिस पर हमें इतना गर्व है, क्या है? क्या वह तुम्हीं नहीं हो। हमारे प्रभु यीशु के दुबारा आने पर जब हम उसके सामने उपस्थित होंगे 20तो वहाँ तुम हमारी महिमा और हमारे आनन्द होंगे।

3 क्योंकि हम और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे इसलिये हमने एथेंस में अकेले ही ठहर जाने का निश्चय कर लिया। 2और हमने हमारे बन्धु तथा परमेश्वर के लिये मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपने सहकर्मी तिमुथियुस को तुम्हें सुदृढ़ बनाने और विश्वास में उत्साहित करने को तुम्हारे पास भेज दिया 3ताकि इन वर्तमान यातनाओं से कोई विचलित न हो उठे। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि हम तो यातना के लिये ही निश्चित किये गये हैं। 4वास्तव में जब हम तुम्हारे पास थे, तुम्हें पहले से ही कहा करते थे कि हम पर कष्ट आने वाले हैं, और यह ठीक वैसे ही हुआ भी है। तुम तो यह जानते ही हो। 5इसलिए क्योंकि मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था, इसलिये मैंने तुम्हारे विश्वास के विषय में जानने तिमुथियुस को भेज दिया। क्योंकि मुझे डर था कि लुभाने वाले ने कहीं तुम्हें प्रलोभित करके हमारे कठिन परिश्रम को व्यर्थ तो नहीं कर दिया है।

6तुम्हारे पास से तिमुथियुस अभी अभी हमारे पास वापस लौटा है और उसने हमें तुम्हारे विश्वास और तुम्हारे प्रेम का शुभ समाचार दिया है। उसने हमें बताया है कि तुम्हें हमारी मधुर याद आती है और तुम हमसे मिलने को बहुत अधीर हो। वैसे ही जैसे हम तुमसे मिलने को। 7सो हे भाइयो, हमारी सभी पीड़ाओं और यातनाओं में तुम्हारे विश्वास के कारण हमारा उत्साह बहुत बढ़ा है। 8हाँ! अब हम फिर साँस ले पा रहे हैं क्योंकि हम जान गये हैं कि प्रभु में तुम अटल खड़े हो। 9तुम्हारे विषय में तुम्हारे कारण जो आनन्द हमें मिला है, उसके लिये हम परमेश्वर का धन्यवाद कैसे करें। अपने परमेश्वर के सामने 10रात–दिन यथासम्भव लगन से हम प्रार्थना करते रहते हैं कि किसी प्रकार तुम्हारा मुँह फिर देख पायें और तुम्हारे विश्वास में जो कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा करें।

11हमारा परम पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे पास आने को हमें मार्ग दिखाये। 12और प्रभु एक दूसरे के प्रति तथा सभी के लिए तुममें जो प्रेम है, उसकी बढ़ोतरी करे। वैसे ही जैसे तुम्हारे लिये हमारा प्रेम उमड़ा पड़ता है। 13इस प्रकार वह तुम्हारे हृदयों को सुदृढ़ करे और उन्हें हमारे परम पिता

परमेश्वर के सामने हमारे प्रभु यीशु के आगमन पर
अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के साथ पवित्र एवम् दोष–रहित
बना दे

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

4 हे भाइयो, अब मुझे तुम्हें कुछ और बातें बतानी हैं।
यीशु मसीह के नाम पर हम तुमसे प्रार्थना एवम्
निवेदन करते हैं कि तुमने हमसे जिस प्रकार उपदेश
ग्रहण किया है, तुम्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये
उसी के अनुसार चलना चाहिये। निश्चय ही तुम उसी
प्रकार चल भी रहे हो। किन्तु तुम वैसे ही और अधिक से
अधिक करते चलो। 2क्योंकि तुम यह जानते हो कि प्रभु
यीशु के अधिकार से हमने तुम्हें क्या निर्देश दिये हैं।
3और परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम उसे पवित्र हो
जाओ, व्यभिचारों से दूर रहो, 4अपने शरीर की वासनाओं*
पर नियन्त्रण रखना सीखो–ऐसे ढंग से जो पवित्र है और
आदरणीय भी। 5न कि उस वासनापूर्ण भावना से जो
परमेश्वर को नहीं जानने वाले अधर्मियों की जैसी है।
6यह भी परमेश्वर की इच्छा है कि इस विषय में कोई
अपने भाई के प्रति कोई अपराध न करे या कोई
अनुचित लाभ न उठाये; क्योंकि ऐसे सभी पापों के लिये
प्रभु दण्ड देगा जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं और तुम्हें
सावधान भी कर चुके हैं। 7परमेश्वर ने हमें अपवित्र बनने
के लिये नहीं बुलाया है बल्कि पवित्र बनने के लिये बुलाया
है। 8इसलिये जो इस शिक्षा को नकारता है वह किसी मनुष्य
को नहीं नकार रहा है बल्कि परमेश्वर को ही नकार रहा
है। उस परमेश्वर को जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा भी
प्रदान करता है।

9अब तुम्हें तुम्हारे भाई बहनों के प्रेम के विषय में भी
लिखा जाये, इसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है क्योंकि
परमेश्वर ने स्वयं तुमको एक दूसरे के प्रति प्रेम करने की
शिक्षा दी है। 10और वास्तव में तुम अपने सभी भाइयों के
साथ समूचे मैसिडोनिया में ऐसा ही कर भी रहे हो। किन्तु
भाइयो! हम तुमसे ऐसा ही अधिक से अधिक करने को
कहते हैं।

11शांतिपूर्वक जीने को आदर की वस्तु समझो। अपने
काम से काम रखो। स्वयं अपने हाथों से काम करो। जैसा
कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं। 12इससे कलीसिया से बाहर
के लोग तुम्हारे जीने के ढंग का आदर करेंगे। इससे तुम्हें
किसी भी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

प्रभु का लौटना

13हे भाइयो, हम चाहते हैं कि जो चिर–निद्रा में सो गये
हैं, तुम उनके विषय में भी जानो ताकि तुम्हें उन औरों के
समान, जिनके पास आशा नहीं है, शोक न करना पड़े।
14क्योंकि यदि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु की मृत्यु
हो गयी और वह फिर से जी उठा, तो उसी प्रकार जिन्होंने
उसमें विश्वास करते हुए प्राण त्याग दिए हैं, उनके साथ भी
परमेश्वर वैसा ही करेगा। और यीशु के साथ वापस ले
जायेगा। 15जब प्रभु का फिर से आगमन होगा तो हम जो
जीवित हैं और अभी यहीं हैं उनसे आगे नहीं निकल पाएँगे
जो मर चुके हैं। 16क्योंकि स्वर्गदूतों का मुखिया जब अपने
ऊँचे स्वर से आदेश देगा तथा जब परमेश्वर की बिगुल
बजेगी तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा। उस समय जिन्होंने
मसीह में प्राण त्यागे हैं, वे पहले उठेंगे। 17उसके बाद हमें जो
जीवित हैं, और अभी भी यहीं हैं उनके साथ ही हवा में प्रभु
से मिलने के लिये बादलों के बीच ऊपर उठा लिया जाएगा
और इस प्रकार हम सदा के लिये प्रभु के साथ हो जायेंगे।
18अत: इन शब्दों के साथ एक दूसरे को उत्साहित करते
रहो।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

5 हे भाइयो, समयों और तिथियों के विषय में तुम्हें
लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है 2क्योंकि तुम
स्वयं बहुत अच्छी तरह जानते हो कि जैसे चोर रात में
चुपके से चला आता है, वैसे ही प्रभु के फिर से लौटने
का दिन भी आ जायेगा। 3जब लोग कह रहे होंगे कि
“सब कुछ शांत और सुरक्षित है” तभी जैसे एक गर्भवती
स्त्री को अचानक प्रसव वेदना आ घेरती है वैसे ही उन पर
विनाश उतर आयेगा और वे कहीं बच कर भाग नहीं
पायेंगे। 4किन्तु हे भाइयो, तुम अन्धकार के वासी नहीं हो
कि तुम पर वह दिन चुपके से चोर की तरह आ जाये।
5तुम सब तो प्रकाश के पुत्र हो और दिन की संतान हो।
हम न तो रात्रि से सम्बन्धित हैं और न ही अन्धेरे से।
6इसलिये हमें औरों की तरह सोते नहीं रहना चाहिये,
बल्कि सावधानी के साथ हमें तो अपने पर नियन्त्रण रखना

वासनाओं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: अपनी ही पत्नी के साथ कैसे रहा जाता है।

चाहिये। **7**क्योंकि जो सोते हैं, रात में सोते हैं और जो नशा करते हैं, वे भी रात में ही मदमस्त होते हैं। **8**किन्तु हम तो दिन से सम्बन्धित हैं इसलिए हमें अपने पर काबू रखना चाहिये। आओ विश्वास और प्रेम की झिलम धारण कर लें और उद्धार पाने की आशा को शिरस्त्राण की तरह ओढ़ लें। **9**क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके प्रकोप के लिये नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिये बनाया है। **10**यीशु मसीह ने हमारे लिये प्राण त्याग दिये ताकि चाहे हम सजीव हैं चाहे मृत, जब वह पुन: आए उसके साथ जीवित रहें।

11इसलिये एक दूसरे को सुख पहुँचाओ और एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाते रहो। जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

12हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है कि जो लोग तुम्हारे बीच परिश्रम कर रहे हैं और प्रभु में जो तुम्हें राह दिखाते हैं, उनका आदर करते रहो। **13**हमारा तुमसे निवेदन है कि उनके काम के कारण प्रेम के साथ उन्हें पूरा आदर देते रहो।

परस्पर शांति से रहो। **14**हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है आलसियों को चेताओ, डरपोकों को प्रोत्साहित करो, दीनों की सहायता में रुचि लो, सब के साथ धीरज रखो। **15**देखते रहो कोई बुराई का बदला बुराई से न दे, बल्कि सब लोग सदा एक दूसरे के साथ भलाई करने का ही जतन करें।

16सदा प्रसन्न रहो। **17** प्रार्थना करना कभी न छोड़ो। **18**हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो।

19पवित्र आत्मा के कार्य का दमन मत करते रहो। **20**नबियों के संदेशों को कभी छोटा मत जानो। **21**हर बात की असलियत को परखो, जो उत्तम है, उसे ग्रहण किये रहो **22**और हर प्रकार की बुराई से बचे रहो।

23शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह पवित्र करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और देह को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णत: दोष रहित बनाये रखो। **24**वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया है, विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही करेगा।

25हे भाइयो! हमारे लिये भी प्रार्थना करो। **26**सब भाइयों का पवित्र चुम्बन से सत्कार करो। **27**तुम्हें प्रभु की शपथ देकर मैं यह आग्रह करता हूँ कि इस पत्र को सब भाइयों को पढ़ कर सुनाया जाये। **28**हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html